गुरुवाणी

हम किस कुल में जन्म लिये हैं, किस जाति में जन्म लिये हैं, इसका कुछ खास महत्व नहीं होता है। मुख्य बात यह है कि हमारे संस्कार और हमारी मनोवृत्ति किस प्रकार की है?

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ३, वाराणसी। रविवार १५ फरवरी २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

सत्य का अवलम्बन

''सत्यं वदं, धर्म चरं'' की शास्त्रोक्त उक्ति आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है, जैसे वैदिक काल में भी थी। सत्य का आचरण यानी मन कर्म वाणी से सत्य का अनुपालन मनुष्य को अन्ततोगत्वा चरम सुख की प्राप्ति करता है; जिसके सहारे व्यक्ति धर्मानुकूल आचरण करने में भी आनन्द की अनुभूति करता है। सत्यभाषी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति वास्तव में धनी होती है, वह प्राकृतिक सम्पदा का स्वामी होता है, उसे छाया की तरह जीवन में आने वाले सुख-दु:ख प्रभावित अथवा अप्रभावित नहीं करते; क्योंकि सत्य की पूँजी उसे इन सभी थोथी, अमर्यादित आसक्तियों एवं वासनाओं से रक्षा-कवच का कार्य करती है। ईश्वर या प्रकृति ने मनुष्य के लिए सत्यशील राह पर चलने को सुगम बनाया है; परन्तु यह तो अपनी मानसिक कमजोरी है कि हम सत्य को छोड़कर असत्य के आचरण को लाभकारी समझ बैठने की भूल करते हैं जिसका खामियाजा भी अन्तत: उस पात्र को भुगतना ही पड़ता है। सत्य तो वह मणि है जिसको धारण करने से जीवन में अपने आप कई सद्गुण छाया की भाँति पीछे-पीछे स्वमेव लग जाते। वैसे भी किसी भी वाक्य के पूर्व सत्य लग जाने से ही भाव बदल जाता है, एक पवित्रता की आभा आने लगती है, इसीलिये विश्वके हर देश में सत्य को शपथ पत्र के रूप में प्रमाणिक माना जाता है तथा मानस में भी गौरी माता ने ''सुनि सिय सत्य आशीष हमारी पूजहिं मनोकामना तुम्हारी'' के रूप में सीता जी को सत्य आशीष प्रदान किया गया है, जो फलित होता है।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने ईमानदारी से सत्य का अनुशरण अनुशीलन किया है। सत्य एक विराट व्यापक शब्द है जिसमें अनेकानेक मणिमुक्तक गूँथे हुए हैं, बचपन में मोहन दास के बालमन पर ''सत्य हरिश्चन्द्र'' नामक नाटक का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि कालान्तर में उन्होंने सत्य एवं अहिंसा के बल पर दिग-दिगन्त में फैली अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन की चूलें हिला दी। उनके नेतृत्व में सत्याग्रह के बल पर आज हम स्वतंत्र भारत के वासी कहलाने एवं विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के स्वशासन में सांस लेने के अधिकारी बन पाये है। कहा जाता है कि ''ईश्वर के घर देर है अंधेर नहीं है'' यानी ''जैसी करनी वैसा फल आज नहीं तो निश्चित कल।'' कहने का तात्पर्य यह है कि एक साधारण व्यक्ति यदि क्षणिक लाभ को तिलांजलि दे दें तथा असत्य के शार्ट-कट को छोड़कर सत्य के लम्बे पथ का अनुसरण वह करता रहे तथा अपने मार्ग से विचलित न हो तो निश्चय रूप से वह आने वाले कल में विजेता की भाँति चमकते एवं दमकते रहने के लिये अपना स्थान सर्वथा सुरक्षित कर लेता है। गोस्वामी जी ने भी कहा है कि ''साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप, जिनके हृदय साँच है, उनके हृदय आप'' यानी यदि एकमात्र सच्चाई के पथ पर ही हम चलते रहे एवं तद्नुसार अपनी मर्यादा बनाये रक्खे, तो व्यक्ति एक तप:शील की भाँति वह सब कुछ उसे अपने आप बिना विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त हो जायेगा, जिसके लिये सामान्य व्यक्तियों को अलग से विशेष प्रयास करने की जरूरत होती है।

सत्य शुद्ध अघोर के नियमों का नाम है वह अभेद है शिव-शक्ति का समुच्य है, सत्य, शाश्वत होता है ''रमता है सो कौन घट-घट में विराजत है'' का नाम है, उसमें बनावटपन या कृत्रिमता का सदैव अभाव होता है। एक प्राकृतिक पुष्प से ही सौरभ सुगंध की छटा बिखरती है न कि प्लास्टिक फूल से। वट-वृक्ष का नन्हा सा बीज यदि असली है तो उसमें पूरे वृक्ष को प्रकट करने की अदम्य क्षमता विराजमान है, उसे केवल अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है, सत्य ही प्रकृति का चमत्कार है, सत्य के ही साथ विश्वास भी जुड़ा हुआ है, सत्य एवं विश्वास में जुड़ाव, सम्बन्ध सूर्य-तपिश या चन्द्रमा और चाँदनी का है, दोनों एक दूसरे के पूरक है।

हमारे राष्ट्र के संविधानवेत्ताओं ने भी इसीलिए ''सत्यमेव जयते'' को राष्ट्रीय सद्वाक्य के रूप में अपनाया है तथा कनिष्ठ से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक में इसी के अनुसरण को सर्वमान्य किया गया है। चलती आम भाषा में भी हम कहते हैं कि झूठ के पाँव नहीं होते अर्थात् जहाँ सत्यता का विशाल वट-वृक्ष अपनी छाया देता है वहाँ असत्य अधिक काल तक टिक नहीं सकता, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य के उदित होते ही अंधकार अपने आप तिरोहित हो जाता है। अत: सौभाग्यशीलता, निर्भयता, सदाशयता, कर्मठता का जन्म सत्य की कोख से ही होता है। जिसके मानस में सत्य का उदय हो जाता है वह नर या नारी आत्मविश्वास से लबरेज रहते हैं, वे बुद्धिमान की श्रेणी में गिने जाते हैं, उनकी मेधा शक्ति दिन प्रतिदिन प्रखर होती रहती है, उन्हें छलकपट, धोखाधड़ी या फरेब नहीं करना पड़ता, न तो उनमें किसी प्रकार का दिखावा या दम्भ ही होता है क्योंकि इस पूँजी का स्वामी खरे-खरे स्वर्ण का स्वामी होता है, उसे पीतल या अन्य धातु पर स्वर्ण की कलई करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वे नर से नारायण की श्रेणी में आ जाते हैं। दूरदराज तक ऐसे व्यक्तित्व की आभा विकिरण की भाँति सुप्रकाश फैलाती है, वे चाहे गृहस्थ हो या जीवन के किसी क्षेत्र में हो, स्वाभाविक रूप से वे अधिकांश जनों के आदर के पात्र बन जाते हैं। यद्यपि सत्य का आयाम बड़ा ही विशाल विराट है, जो सब हम अपनी नंगी आँखों से स्पष्ट देखते हैं, वही सत्य नहीं है वह जो एक समय काल के लिये एक स्थान पर सत्य होता है तो दूरस्थ अवस्थित व्यक्तियों के लिये असत्य का आभास कराता है जैसे भारतवर्ष में शाम अमेरिका में दिन का होना सिद्ध करता है। यदि हम हवाई जहाज की यात्रा के अन्तर्गत सागर को ऊँचाई से देखें तो उसकी गगनचुम्बी तरंगे स्थिर दिखती हैं, धरती पर अवस्थित चौड़ी सड़कें सँकरी एवं ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ छोटी-छोटी दिखती है यानी सत्य दृश्यमान भी है तथा अदृश्य भी है। हम जानते हैं कि हमारे सात पीढ़ी से पूर्वज अमुक-अमुक थे, उक्त सत्यता को श्रवण यानी श्रुति करके ही मानना पड़ता है, जिसमें आस्था एवं अटूट विश्वास का पुट होता है। इसी प्रकार हिन्दुओं में शवयात्रा के समय ''राम नाम सत्य है'' की प्रतिध्वनि से शाश्वत ईश्वर के अस्तित्व को ही एकमात्र सत्य माना गया है जबकि इसके विपरीत मुस्लिम बन्धुओं के जनाजे में मौन होकर अल्लाह को एकमात्र सत्य समझने की परम्परा है। अत: सत्य को मुखर होकर तथा मौन होकर दोनों ही स्थितियों में ''सत्यं ब्रह्म, जगत मिथ्या'' को अंगीकार किया जाता है। सत्य को अप्रिय बनाकर अभिभाषण में त्याज्य कहा गया है, माँ यदि अपने बच्चे को उसके स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए मिठाई न होने का बहाना बनाती है तो उसे असत्य या झूठ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता,

शेष पृष्ठ दो पर

संत मिलन सम सुख जग नाहीं

इस संसार में अपने होश सम्भालने से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक एक आतुर मानव स्वभाव से ही कुछ न कुछ निरन्तर पाने की इच्छा करता है। यह उसकी प्राकृतिक भूख है, जैसे शरीर के पोषण के लिए जीवित रहने के लिये हवा, पानी, खाद्य-पदार्थ अनिवार्य है उसी प्रकार मनुष्य के मानसिक तृप्ति के लिए उसे नाना प्रकार की चाह की तृष्णा सताये रखती है। इसीलिये सांसारिक भोग, विलास, भौतिक वस्तुओं को पाने में उसकी ललक बनी रहती है, साथ ही वह अपने समाज के, अपने समानान्तर वर्ग के अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अपने को तौलता रहता है। मानस में स्पर्धा बनी रहती है तथा विचित्र आलम तो यह है कि मनुष्य अपने वर्ग के दूसरे साथियों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों से ही अपनी तुलना करता रहता है न कि अपने से भिन्न स्तर के व्यक्तियों के साथ। एक वस्तु की प्राप्ति के पश्चात् वह दूसरी की प्राप्ति हेतु दौड़ में लग जाता है तथा उसकी ज्यों त्यों आकांक्षायें पूरी होती है, त्यों त्यों उसके भोग की गर्जना भी बढ़ती जाती है तथा अन्त में एक अतृप्ति के साथ उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है एवं वह पाने की संतुष्टि से विमुख होकर अपने अमूल्य सम्पत्ति, धरोहर से यानी सन्तोष नामक मानसिक संतृप्ति से वंचित ही रह जाता है।

ऐसे में स्वाभाविक है कि हम क्या करें? जिससे हमारी समस्त माँगे, इच्छाएँ स्वमेव तिरोहित हो जाय एवं ''आज नाथ मैं काहु न पावा'' का भाव वास्तव में अपने अन्तर्मन में उत्पन्न हो जाय बड़े सरकार यानी परम पूज्यपाद भगवान अवधूत रामजी की वाणी है कि ''ईश्वर से ऐसा माँगों ताकि कुछ माँगना न पड़े'' जैसे पाण्डवों ने सीधे योगीराज श्रीकृष्ण को ही अपना लिया एवं शेष विशाल विकल्प को त्याज्य कर दिया। उसी प्रकार यदि मनुष्य को सौभाग्य से उसके जीवन काल के किसी अवस्था में सच्चे संत का सानिध्य मिल गया तो मानव मालामाल बन जाता है उसे गूँगे के मीठे फल की भाँति एक अकल्पनीय, अकथनीय, अप्रीतम अपरिमित आनन्द, शान्ति ही प्रतीत हो जाती है, वह स्वस्थ खिले गुलाब के पुष्प सा निहाल हो जाता है, उसका जीवन भावों के रसधार से परिपूर्ण हो जाता है, उसे चरम आनन्द एवं शान्ति की प्राप्ति हो जाती है जो उन विलासिता भरी भौतिक वस्तुओं, बड़े-बड़े मकान, सम्पत्ति आदि से कई गुणा अधिक महत्व का होता है एवं इसका अनुभव उन्हें ही होता है जिन्हें सौभाग्य से संतों का सानिध्य सुख एवं सारूप्य सुख का अनुपम अनुभव होता है, जिसके पश्चात् व्यक्ति अपने मस्तिष्क, मन, वाणी एवं कर्म से प्रखर पुरुषार्थी सिद्ध होता है, वह अपने प्रत्येक छोटे या बड़े काम को बड़े ही यत्न एवं मनोरथ से करता है, वह नितान्त व्यक्तिगत कल्याण तक सीमित न होकर समिष्टि के लिए, पर-पीड़ा तिरोहन हेतु अपने को प्रस्तुत करने में उसे असीम आनन्द की अनुभूति होती है। परन्तु यह सब तभी संभव है जब किसी सच्चे संततराश के द्वारा वह अनगढ़ पत्थर निरन्तर तराशा जाता रहे, जिसके लिये सम्बन्धित व्यक्ति को अपना अनूठा विश्वास, अपना सच्चा समर्पण अर्पित करना पड़ता है, संत के वचनों के अनुपालन में अपने को पिरोना पड़ता है, जैसा कि सुन्दरकाण्ड में गोस्वामी जी ने कहा है कि—

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग।
तुल न ताही सकल मिलि जो सुख लौ सत्संग।।

अर्थात् संत की कृपा एवं सत्संग यानी संत के वचन का संग बड़ा ही दुर्लभ अमृत है तथा विरले ही इस अद्भुत रस का पान कर कृतार्थ होते है, अधिकतर मानव भड़कीली चमक दमक एवं भौतिकता की आग में जीवन भर जलते रहने को बाध्य हो जाते हैं तथा अग्नि में पतंगों की भाँति जलकर स्वाहा हो जाते हैं। अत: माँ गुरु की ऐसी कृपा, संत के ऐसे वरदान की आवश्यकता है, जैसे दिवाकर के उदय के पश्चात् हमारे जीवन के गहन अंधकार का विनाश हो जाय, माँ गुरु अपने सुसुप्तावस्था में पड़े भक्तों के अन्दर के बीज को समुन्नत, बनाकर उसे विशाल वट वृक्ष के रूप में परिणीत कर दें।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्य का अवलम्बन

इसी प्रकार यदि किसी के प्राण पर आसन्न संकट आ गया हो तो उसके रक्षार्थ बोला गया झूठ सत्य की ही भाँति प्रतिष्ठा पाता है। सत्यता एक ऐसी प्रभावशाली स्थिति का नाम है जो एक न एक दिन प्रकट होके ही रहती है, और छद्मवेशधारियों, ठगों का वर्षों से बनाया गया किला साम्राज्य ध्वस्त होने में तनिक भी देर नहीं होती, जिसका दृष्टान्त आये दिन भारतवर्ष में घटने वाली दिन प्रतिदिन घटनायें एवं घोटालों के उजागिर होने से हो रहा है। सत्य आचरणकर्ता का जीवन बड़ा ही निराला एवं मस्त होता है, उसे भौतिकता की कमी कभी प्रभावित नहीं कर पाती क्योंकि उसके मस्तिष्क की सोच ही तद्नुसार ढल जाती है, साथ ही उसे कुछ भी अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक नहीं करना पड़ता, सब कुछ प्रकृति के नियमानुसार चलता रहता है जबकि एक झूठ बोलने के आदी अथवा असत्य आचरण वाले व्यक्ति को उस झूठ को सदा याद रखने का तनाव बना रहता है जिससे कि भविष्य में उसे हेठी या जगहँसाई का सामना न करना पड़े। असत्यवादी की स्थिति उस नकल करते विद्यार्थी की हो जाती है जो परीक्षा कक्ष में पकड़े जाने पर नाना प्रकार से अपने बचाव के लिए गिड़गिड़ाता रहता है जबकि निर्भय सिंह की भाँति एक ईमानदार व सत्याचरण वाला विद्यार्थी अन्यथा समय न गवाकर निर्धारित तीन घंटे के एक-एक क्षण का अधिकाधिक सदुपयोग कर अपने कार्य में संलग्न रहता है एवं अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जीवन धन्य बनाता है। वह समाज के लिये अनुकरणीय बन जाता है।

सत्य की महिमा को अत्यधिक स्पष्ट करते हुए ''अघोर वचन शास्त्र'' के तीसरे अध्याय में इसे स्थान दिया गया है तथा सत्यभाषी को सदैव कर्मरत रहने वाला जीवन के अमूल्य एक-एक क्षण का सतत सदुपयोग करने वाला तथा दुर्गुणों से सदैव दूर रहने वाला कहा गया है। सत्य एवं परिश्रम के बल पर की गयी कमाई को सद्फल कहा गया है। सत्यार्थी की अपने पाँव पर सतत दृष्टि होती है उसे अपने धड़ के संचालन में सुविधा होती है एवं पथ में ठोकर लगने की संभावना न के बराबर होती है। उसे दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति नहीं होती, उसकी दृष्टि विशाल होती है, उसकी दृष्टि सदैव गुरु के पद-नख में होती है, उसे तृष्णा पिपाशा या सांसारिक रोग कष्ट नहीं देते। सत्य का मार्ग सभी धर्मों में मैत्रीकारक, स्नेह कारक होता है, सत्य के अनुयायी चाहे वे किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय के हो, वे जहाँ विराजते हैं, सभी को अपने आस-पास शीतल छाया ही प्रदान करते हैं वे सभी के उपकारक होते हैं। सत्यार्थी, सतपात्र होता है वे निर्भीक एवं आत्मविश्वासी होते हैं, वे जग के पीड़ाहारी यानी सन्त करि नाई गुरु ईश्वर की छाया में विश्वास करते हैं उनका विश्वासी मत हर स्थिति परिस्थिति में धैर्यवान की तरह अडिग होता है, वे कुम्हड़ बतिया की तरह साधारण अंगुली दिखाने या वायु के अंधड़ में गिर नहीं जाते उन्हें अपने आचरण पर भरोसा रहता है तथा कठिनाई में वे दूसरे के काम आते हैं, मुसीबत में साथ देते हैं तथा ईश्वर के कृपा पात्र बनते हैं। मनुष्यों का जीवन-दर्शन समुन्नत बनाते हैं।

यद्यपि सत्य का आचरण या अघोर का आचरण, सरल बनना बड़ा ही दुष्कर एवं दुरुह कार्य है, यह कहने में जितना सरल है उतना ही आचरण में कठिन भी है, सरल यानी तरल यानी निर्दोष, निर्मल, विकार रहित होने को ही सत्य का आचरण या अघोर के एक गुण से सुसम्पन्न होने का नाम है, उस जातक का आहार-विहार, आचार-विचार अपने आप परिष्कृत हो जाता है वह हजारों मनकों में अलग-अलग चमकने लगता है, वह सत्संग एवं गुरुवचन को मनन कर अपने जीवन को सार्थक बना लेता है वह न केवल सच्चे सत्य विचारों का मंथन करता है बल्कि कार्यरूप में परिणित कर वह समाज में अग्रणी की भूमिका निभाता है। देर सबेर सभी आस-पास उसके मुरीद हो जाते हैं, उसमें वह कार्यशक्ति जाग्रत हो जाती है जिसके बल पर वह दूसरों के लिये कठिन लगने वाला असाध्य कार्य बड़े ही सलिके एवं सरलता से कर गुजरते हैं। उनके लिये क्षण-प्रतिक्षण अवसर पलक-पाँवड़े बिछाकर प्रतीक्षारत रहता है। उनका अकेलापन उन्हें कुछ सार्थक कर सकने के समर्थ बना देता है, सत्य का आचरण-कर्ता, धर्ता मन, वाणी एवं कर्म से निरन्तर पावन बनता जाता है, वही असली धार्मिक होता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो वह सदा ही सत्कार, आदर का पात्र होता है, वह स्वाभाविक रूप से परिश्रमी एवं कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान होता है।

जैसा कि ''सफल योनि'' में भी उद्धृत है कि सर्वेश्वरी यानी सर्वोच्च सत्ता, जगन्माता का साधक सत्यवादी, जितेन्द्रिय, परोपकारी, निर्विकार व सदाचारी होता है वह गम्भीर होता है। अत: हम सभी को संत के गुण यानी ''सार-सार को गही रहै, थोथा देई उड़ाई'' को अपनाते हुए अपने साथ परहित, जनहित को दृष्टिगत रखते हुए निर्भीकता, सच्चाई एवं ईमानदारी से अपने दायित्व का निर्वहन करना श्रेयस्कर है जिससे पग-पग पर सत्य का प्रकाश हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा ताकि हम सभी ''असतो माँ सद्गमय'' के मार्ग का अनुसरण करें।

क्रींकुण्ड बाबा कीनाराम स्थल पर मना अभिषेक, निर्वाण व स्थापना दिवस

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, रविन्द्रपुरी कालोनी, वाराणसी में १० फरवरी २०१५ दिन मंगलवार को बड़ी धूमधाम से अभिषेक, निर्वाण एवं संस्थान का स्थापना दिवस का पर्व मनाया गया।

अघोर गुरुपीठ क्रींकुण्ड बाबा कीनाराम स्थल के पूज्य पीठाधीश्वर अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम रामजी के द्वारा परिसर में मौजूद सभी औघड़ सन्तों की समाधियों के पूजन एवं आरती के साथ कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ।

पूज्य पीठाधीश्वर जी औघड़ गद्दी पर विराजमान हुए। तत्पश्चात् अघोर भक्तों ने क्रमबद्ध कतार में होकर गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी आस्था, श्रद्धा व भाव अर्पित किया। प्रात:काल से देर रात्रि तक भक्तगण बाबा का दर्शन व पूजा करते रहे। बीच-बीच में **'हर हर महादेव'** के उद्घोष से पूरा स्थल परिसर गुंजायमान होता रहा।

प्रात:कालीन आरती के बाद भक्तों द्वारा स्थल परिसर में सफाई एवं श्रमदान किया गया। दोपहर में भक्तों में प्रसाद वितरण किया गया।

श्रद्धालुओं की आध्यात्मिक, मानसिक एवं भौतिक शंकाओं के निवारण व भक्ति श्रद्धा के अपूर्व प्रदर्शन के फलस्वरूप हर जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं भाषा प्रान्त के भक्तों का इस तपोस्थली बाबा कीनाराम स्थल पर अपूर्व मिलन होता है।

बाबा कीनाराम स्थल किसी भी प्रकार का भेदभाव, जाति, धर्म अथवा पंथों में अन्तर किये बिना सर्वमान्य रूप से सैकड़ों वर्षों से पूज्य एवं मान्य रहा है।

बाबा कीनाराम स्थल, क्रींकुण्ड के भक्त शिवलोकगामी दयानारायण पाण्डेय जी के तिरोधान एवं भजन, गजल, भोजपुरी के गायक सुनील सिंह के आकस्मिक निधन के कारण सायं गोष्ठी एवं संध्याकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया। हुतात्मा की शान्ति के लिये स्थल परिसर में परम पूज्य पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी और श्रद्धालुओं ने दो मिनट का मौन धारण किया एवं श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

अन्त में स्थल परिसर में उपस्थित भक्त जनसमूह द्वारा 'हर हर महादेव' के उद्घोष से वातावरण को गुंजायमान बनाया गया एवं कार्यक्रम के समाप्ति की घोषणा की गयी।

आवश्यक सूचना

सभी सम्मानित संस्थान के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सदस्यता संख्या 100 के आगे से सभी सदस्यों की सदस्यता निरस्त कर 10 फरवरी दिन मंगलवार 2015 से नया कार्ड एवं सदस्यता संख्या आवंटन संस्थान के प्रधान कार्यालय में किया जा रहा है।

अतः आप सभी सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त तिथि तक प्रधान कार्यालय से सदस्यता फार्म भरकर प्रमाणिक पहचान पत्र की फोटो प्रति के साथ कार्यालय में यथाशीघ्र जमा करें ताकि आपको सदस्यता प्रमाण पत्र प्रदान किया जा सके।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें—

0542-2277155, 9794487878

बुढ़ऊ बाबा (अवधूत राजेश्वर रामजी) का अवतरण दिवस

ब्रह्मकालीन औघड़ संत एवं क्रींकुण्ड वाराणसी के दसवें पीठाधीश्वर पूज्यपाद बाबा राजेश्वर राम जी के अवतरण दिवस पर उनके जन्म स्थान महुअरकलाँ, जनपद-चंदौली में दिनांक १३ फरवरी २०१५ को एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। बुढ़ऊ बाबा की सजीव प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा विधिवत पूजा स्थल के ११वें पीठाधीश्वर जी के द्वारा जयघोष एवं सैकड़ों स्थानीय भक्तों के साथ सम्पन्न हुआ। बुढ़ऊ बाबा के पैतृक निवास के समक्ष अमराई के बीच स्थापित मूर्ति के समक्ष पूज्य पीठाधीश्वर जी का आसन मंच पर शोभायमान था। स्थानीय जनता जनार्दन एवं बुढ़ऊ बाबा के परिवार के व्यक्तियों यथा श्री मिथिलेश सिंह, राम मनोहर सिंह के साथ स्थानीय भक्तों द्वारा भी मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया।

तदोपरान्त संचालक ब्रह्मनिष्ठ श्री सूर्यनाथ सिंह के द्वारा गोष्ठी का प्रारम्भ किया गया। वक्ताओं में प्रमुख रूप से अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय सचिव श्री उदयभान सिंह, युवा अघोर भक्त श्री अजीत सिंह, डॉ० गया सिंह एवं स्थानीय भक्तों के द्वारा अघोर की महिमा एवं औघड़ संतों के वाणी विचार पर चलने का आह्वान किया गया। अन्त में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए वर्तमान पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा अपने बाल्यकाल में ही अपने गुरु यानी बुढ़ऊ बाबा के सानिध्य का विवरण एवं वर्तमान में उनके व्यापक विचारों के विस्तारण पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम हेतु प्रयासरत श्री मिथिलेश सिंह जी के भाव की सराहना की गयी तथा जनसमूह को आशीर्वाद दिया गया।

धन्यवाद ज्ञापन युवा अघोर भक्त श्री राजदीप सिंह के द्वारा सम्पन्न किया गया। उत्साहित एवं उपस्थित जनसमूह द्वारा अघोर जयकारे एवं अघोर जयघोष के साथ गोष्ठी सम्पन्न की गयी। तत्पश्चात् स्थानीय अघोर भजन मण्डली द्वारा बड़े ही मनोभावन भजन गायन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। आये हुए अघोर भक्तों में प्रसाद वितरण एवं परम्परागत रूप से देर रात्रि तक भव्य भंडारे का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

बाबा राजेश्वर राम (बुढ़ऊ बाबा)

दिव्य-छवि गौरांग बदन, अविचल व्यक्तित्व के थे विकिरण;
अलमस्त रहें, मदमस्त रहें, परिभाषित करते थे जीवन;
स्थल इनसे जाग्रत रहता जो आता शान्ति पाता;
मनवांछित फल पाने को हर जन थप्पड़ को ललचाता;
बाबा का पुरजोर तमाचा, जो पाया धन्य धन्य हुआ;
रोग शोक से मुक्ति पाया, स्वस्थ सुखी सम्पन्न हुआ;
इनके शिष्य अभी भी आते, औघड़ को वैसे ही पाते;
मौन हो इनसे बातें करते, अपनी मन की व्यथा जताते;
राजेश्वर है नाम आपका, भक्ति, सुयश महिमा भारी;
शीश नवाके आज भी पालें, जो चाहे नर या नारी;
हे औघड़ हे महाराज, सबको स्थायी सुख देना;
निज भक्तों व शरणागतों का निश्चय ही मंगल कर देना;
हे राजेश्वर! हे अघोरेश्वर! क्षमा दान सबको करना;
साहस, हिम्मत, शक्ति देना, कायरता को हर लेना;

हर हर महादेव

निश्छल जीवन

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

पिछले अंक का शेष

धर्म बन्धुओं!

परिवार के सदस्यों की संख्या का अधिक होना कष्टदायक है। इससे स्त्रियों के जीवन में भी दु:ख उत्पन्न होता है। स्त्रियों का सोचने-विचारने का ढंग एकपक्षीय होता है। वे बहुत ही जल्द कलह का पात्र बन जाती है। पहले अपना घर जलाती हैं तब महल्ला-टोला को। थोड़ा सा भी इनके मन के विपरीत होने से वे बिगड़ जाती हैं। सबको अपना ही प्यारा होता है। यह झूठ है कि हमारे पति, पुत्र प्यारा हैं। उनको अपनी सुविधानुसार, उनके अपने समय पर, उनके अनुकूल जो उपलब्ध हो जाय वही प्रिय है भले ही वह कुकृत्य और अपराध कर्म का ही अर्जक क्यों न हो। ईश्वरत्व का बोध स्त्रियों को नहीं पुरुषों को होता है। वे शक्ति हो सकती हैं और अपने को और दूसरों को भी शक्ति बना सकती हैं। उनमें महान गुण हैं। वे प्रेरक हुई हैं। जो शक्ति सब में सन्निहित है यह वही प्राण है जिसकी उपेक्षा करने वाला प्राणी कुकृत्य काया हो जाते हैं। जो अपनी प्राणमयी भगवती को इस काया में देखता है वही वस्तुत: देखना जानता है और उसी को वह हस्तगत भी होती है। ऐसा व्यक्ति दूसरा सौरमण्डल भी तैयार करता है या इसी सौरमण्डल में नक्षत्र बनकर रहता है। चैतन्य होकर मैं जानता हूँ कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, मुहम्मद इत्यादि नक्षत्र की भाँति विद्यमान हैं। इसलिये यदि हम थोड़ा भी कर लें तो इस स्थान देश और विश्व में नक्षत्र के भाँति चमकेंगे। जो वीर्य प्राण की सुरक्षा में लगा रहता है, वह नित्यता में नयी नयी अनुभूति, सुख प्राप्त करता है। वह रोज-रोज जन्म लेकर नया अनुभव प्राप्त करता है। सांसारिक मनुष्य की सैकड़ों कामनायें होती है जो पूरी नहीं हो सकती है। तब वह विक्षिप्त काया, विक्षिप्त मन हो जाता है। भाई-बन्धु कहते हैं, उसका मस्तिष्क खराब हो गया है वे जो थे अब वे नहीं है। वे हर क्षण मर रहे हैं। प्राणवायु धीरे-धीरे घट रही है। प्राणपखेरू अब उड़ने वाला है। इसके विपरीत शक्ति का अर्जन करने वाला व्यक्ति का प्राण स्वस्थ रहता है। वह बुढ़ापा, एकान्त समूह भीड़भाड़ में भी, समान रूप से अच्छा महसूस करता है। यहाँ तक कि अरण्य पहाड़ में भी वह अच्छा अनुभव करता है। उसके लिये महल और झोपड़ी में कोई फर्क नहीं है।

अक्षर नौ ही होते हैं। उसके बाद गोलार्द्ध (शून्य) जुट जाता है। नवरात्रि के नौ दिनों के प्राण, जीवन, सुच्चरित्रता, सुकृत्यों के अनुसंधान के बाद शून्य जुटता है। तब शक्ति का अर्जन सुगम हो जाता है। शक्ति को हम अनेकों नाम से और रूपों में जानते हैं। जिसका नाम होता हैं उसके रूप का होना सुनिश्चित है। अत: यदि यह नाम सार्थक है तो उसका रूप है किन्तु सिर्फ नाम का कोई महत्व नहीं है। शंकर दास नामक व्यक्ति तम्बाकू बेचते हैं, विष्णु साव अपने नाम के खातिर लड्डू बेचते हैं। मंत्री, नेतागण, अपने नाम के खातिर मर रहे हैं। इसी पृथ्वी पर बड़े-बड़े राजा, महाराज नवाब हुए जिनका नामोनिशान नहीं है किन्तु कबीर दास, तुलसीदास जैसे महापुरुषों के नाम गाँव-गाँव में अमर हैं। जो अपने नाम को अमर करने के लिये मर रहे है, उनका प्रयास व्यर्थ है। नाम अमर होता है महापुरुषों का, सज्जनों का! वे लम्बी आयु वाले होते हैं। तुलसीदास को मरे हुए ३०० वर्षों से ऊपर हो चुके किन्तु उनसे अभी भी हम बात कर सकते हैं। नाम का जाप या प्रार्थना नहीं है। जब तक चित्त में प्राण के लिये उत्सर्ग नहीं होगा तब तक कुछ भी सुलभ नहीं होगा।

नाम का रूप होता है। राम को जिसके बल पर हम सब लोग याद करते हैं वह उनका चरित्र है- रामचरित्र। हम राम को ढूँढ़ते हैं और उनके चरित्र को अपनाकर हम उससे भी बड़ा हो सकते हैं। रावण ने लक्ष्मण को कहा था- 'राम चरित्रवान है' और इसीलिये विजयश्री उनके चरणों को चूम रही है। मेरे पास चरित्र नहीं है। इसीलिये मैं दुर्दिन देख रहा हूँ। तो बन्धुओं! जो दुष्कृत्य काया है उसे सुकृतय काया में परिवर्तित करना है। यदि हम रामचरित्र को ढूँढ़ते होते तो आज हमारे पास अनगिनत राम होते जो उल्टा साधता है उसको वह साध्य नहीं होता। बहुत से महात्मा रामचरित्र को लाने का प्रयत्न करते है। मन और चित्त को पवित्र रखें। कुकृत्य काया व्यक्तियों के साथ मिलने जुलने से उन्हीं के समान बन जाने, हो जाने का डर है। वैसी स्थिति में अपराधकर्मियों की तरह आप भी बन जायेंगे। हमें दुर्गा के चरित्र, गुणों शक्ति को अंगीकार करना है जो कमोवेश सब में विद्यमान हैं। दुर्गुणों को रखते हुए हम उन्हें नहीं प्राप्त कर सकते बल्कि उससे नुकसान होगा। इन्द्रियों की दुर्बलता का परित्याग कर हम कान्ति, शील और गुण प्राप्त कर सकते हैं। चरित्र सबसे ऊँची और बड़ी चीज है। उसी को अंगीकार कीजिये। वही राम, देवी, दुर्गा है। उससे भिन्न कोई कुछ नहीं है।

समूह के विचार एवं मार्ग का चिन्तन ही प्रधान है

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आप लोगों द्वारा जो विचार अभिव्यक्त किया गया, वह सराहनीय एवं ग्रहण करने योग्य हैं। मैं आपके स्नेह एवं श्रद्धाशील का अनुगृहीत हूँ। मैं एक किसान के खपरैल के घर में पैदा हुआ हूँ। गृह त्याग के बाद भी मैंने समाज का त्याग नहीं किया है। समाज के बारे में सोचने तथा उसके प्रति उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिये भारत माता का नाम ही सर्वेश्वरी है। उसके निवासियों को सुखी बनाने के लिये ही यह समूह है। भारत माता के गले में देशभक्तों की मुण्ड-माला है। देश काल के अनुसार उनके विभिन्न कर्मों, गुणों एवं प्रेरणाओं के कारण उन्हें विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया और उन्हीं का नाम सर्वेश्वरी है। यह कोई अलग से देवी देवता नहीं। भारतवासियों को जो हम अलग-अलग जाति वर्ग में बाँट कर देखने के आदी हो गये है, वह निहित स्वार्थों की देन है। ऊँच-नीच, साधु या असाधु मनुष्य कर्म से ही बनता है, वह जन्मजात नहीं होता। सर्वेश्वरी के समूह में जो लोग भारत माता के उपासक है, सच्चे हैं, वे इसी राह पर चलकर अच्छा कर्म करके जीने रहने का सही ढंग अपनाते हैं। दूसरे के लिये नहीं बल्कि अपने ही लिये इसे अपनाया गया है समूह के विचार एवं मार्ग का चिन्तन ही प्रधान है।

पूज्य बाबा ने अपने नाम के सम्बन्ध में कहा कि भगवान मेरे परिवार का दिया नाम है, यह मिला है, स्वयं नहीं बनाया है। आपने ''औघड़'' के सम्बन्ध में कहा कि औघड़ों की उपासना, साधना से मुक्ति नहीं ऐसा कुछ लोगों का विश्वास है जो भ्रान्ति पूर्ण हैं इसमें सच यह है कि औघड़ आत्म बुद्धि होते हैं, आत्मबुद्धि वाले को मुक्ति की कोई आवश्यकता नहीं, हाँ देह बुद्धि वाले के चित्त में अनेक कलुषित विचार आते हैं और काया की क्षीणता होती है। औघड़ समदृष्टि समभाव वाला होता है, वह कर्म से मानव को परखता है न कि जन्म से। आपने कहा कि कुकृत्य काया का संग हमारे लिये दुष्परिणामकारी होगा। अत: न तो उसकी चर्चा करें न संग करें। आपने दूसरे के दोष बयना बाँटने और चुगली करने को अवैध तस्करी की संज्ञा देते हुए कहा कि इससे अपने में कमजोरियाँ बढ़ेगी, इसलिये यह शास्त्र और जनश्रुतियों में निन्दित है। देह-बुद्धि वाला ही गलत कार्यों की प्रेरणा देकर बार-बार अशुभ योनियों में जन्म लेता है और इनका कारण बनता है।

आपने सनातन धर्म की चर्चा करते हुए कहा कि ब्राह्मण धर्म नहीं बल्कि हिन्दू धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, हिन्दू, मुसलमान आदि बनने को सब उद्यत हैं पर मानव बनने को कोई तैयार नहीं हैं। अपने ही भारत माता के सन्तानों से दुराव करने के कारण लोग दु:खी हो रहे हैं। जो अभी सनातन धर्म है उनकी विकृतियों को पहले दूर करना होगा। धर्म भी देश काल के अनुरूप होता है। वह तत्काल कार्य करने की वस्तु है न कि विवाद करके समय खोने की। राजा, गुरु, वैद्य भी देश काल के अनुरूप होंगे तो काम बनेगा। प्राचीन काल के आदर्श रहे पर व्यवहार की सफलता तात्कालिक व्यक्तियों द्वारा ही सम्भव है। गुरु बृहस्पति, गौतम, अत्रि का भी आदर्श मानने योग्य है पर वर्तमान के गुरु ही मार्गदर्शन कर सकेंगे।

आपने वीर्य रक्षा एवं वीर्य संग्रह की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि उसकी रक्षा से हर तरह की उन्नति एवं उसके अपव्यय से हर तरह का ह्रास जीवन में आता है। इसी अपव्यय से गुलामी आयी और कुछ देश भक्तों ने मुक्ति दिलाई। कर्त्तव्य करें तो अधिकार स्वयं मिलेगा केवल अधिकार की होड़ में हम सब दु:खी होते रहेंगे। अपराधी निजी स्वार्थ के लिये किसी को आहत करता है तो वह दण्ड पाता है किन्तु सैनिक देश रक्षा के लिये शत्रु सैनिको को काटता मारता है तो उसका आदर सम्मान होता है। महत्व कार्य के साथ दृष्टिकोण का है। आपने कहा कि भगवान भी मिल जाय तो गंगा के किनारे बैठकर माला जपने को नहीं कहेंगे, वह यही चाहेंगे कि आप अपना कर्त्तव्य करे ताकि दु:खी निरीह असहाय जनों को उठाया जा सके। मनुष्य जीवन सीमित है। इस सीमित अवधि में वास्तविक सच्चाई को पहचानना है। कम से कम सही जीवन जीकर हम स्वयं कृतार्थ होंगे। कर्त्तव्य पालन से ही व्यग्रता और तनाव से मुक्ति मिलेगी।

पूज्य बाबा ने शराबखोरी, जुआ आदि दुर्व्यसन से बचने की सलाह देते हुए कहा कि शराबखोरी चरित्र और आयु का हनन करती है। जो दुर्व्यसन है जिनके चलते हम अपने प्राण को अपने आपसे बहुत दूर रखते हैं, वे जब तक दूर नहीं होंगे, हम सुखी नहीं रह सकतें नहीं तो आदत की दवा मौत है क्योंकि मौत ही आदतों से स्थाई छुटकारा दिलायेंगी। अन्त में पूज्य बाबा ने उपस्थित श्रद्धालु श्रोताओं का उद्‌बोधन करते हुए कहा कि अपने इस जीवन में आपने बहुतेरे महात्मा-साधु प्रवक्ता देखे होंगे, बहुत सी अच्छी पुस्तकें पढ़ी होंगी, आपने अपने भी बहुत सी अनुभूतियाँ प्राप्त की होंगी किन्तु जीवन के रोग से मुक्ति नहीं हो सकी है। इसका कारण है अपने आप पर दया नहीं करना। अनेकों तरह के कुत्सित विचार-भावनायें उत्पन्न होती रहती है जिससे जीवन अभिशाप बन जाता है। आप अपने आप पर दया करें और अपनी आत्मा को पद्‌लित न होने दें।

अघोर सूत्र

- मन, वचन, कर्म से हम अपने आपको धोखा न दें, अपने पर दया करें।
- समूह से कपट, मित्र से चोरी तथा गुरु से छल नहीं करना चाहिये।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी